TPC2010	
Intent of Krishnamurti Schools	कृष्णमूर्ति विद्यालयों का प्रयोजन
1st QUESTION: You have often said that no one can show the way to truth. Yet your schools are said to help their members to understand themselves. Is this not a contradiction? Does it not create an elite atmosphere?	प्रश्नकर्ता : आपने अक्सर कहा है कि सत्य का मार्ग कोई नहीं दिखा सकता फिर भी आपके विद्यालयों में अपने को समझने में वहां के सदस्यों की मदद की जाती है। क्या यह असंगति नहीं है? क्या इससे विशिष्ट वर्ग का वातावरण नहीं निर्मित हो रहा है?
The speaker has said that there is no path to truth, that no one can lead another to it. He has repeated this very often for the last sixty years. That is what the speaker has said. And the speaker with the help of others have founded schools in India and here and so on. And the questioner says: are you not contradicting yourself when the teachers and the students in all these schools are trying to understand their own conditioning, educating themselves not only academically as well as possible, but also educating themselves to understand their whole conditioning, their whole nature and the whole psyche of those people in the schools. One doesn't quite see the contradiction.	कृष्णमूर्ति : वक्ता ने कहा है कि सत्य के लिए कोई पथ नहीं है और कोई किसी को सत्य तक नहीं पहुंचा सकता। पिछले साठ सालों से उसने इसे बारबार दोहराया है। और, वक्ता ने अन्य लोगों की मदद से भारत में, यहां पर और अमरीका में विद्यालयों की स्थापना की है। प्रश्नकर्ता पूछता है : ''आपके इन सब विद्यालयों में शिक्षक और छात्र अपनी निजी अवस्था को समझने की कोशिश कर रहे हैं, जिस हद तक मुमकिन हो पाता है वे अपने को किताबी शिक्षा तो दे ही रहे हैं बल्कि साथ-साथ उस शिक्षा को भी प्राप्त कर रहे हैं जिससे उनको अपनी संस्कारबद्धता, अपने स्वभाव और अपने पूरे मन का बोध हो सके, क्या इसमें असंगति नहीं है?'' इसमें कोई विशेष असंगति नज़र तो नहीं आ रही है।
Schools, from the ancient Greek and ancient India and so on, are places where you learn, learn where there is leisure. Please go with me a little bit. One cannot learn if you have not leisure. That is, time to yourself, time to listen to others, time to enquire. Such a place is a school. The modern schools all over the world are merely cultivating one part of the brain which is the acquisition of knowledge, technologically, scientifically, biologically or theology and so on. They are only concerned with the cultivation of a particular part of the brain which acquires a great deal of knowledge, outer knowledge - astrophysics, theoretical physics, architecture, engineering and so on, surgery, medicine, so they are cultivating only as far as one can see knowledge. That knowledge can be used skilfully to earn a livelihood, or unskilfully, depending on the person. The schools, such	प्राचीन ग्रीक और प्राचीन भारत के समय से विद्यालय वे स्थान रहे हैं जहां आप सीखते हैं। सीखते वहां है जहां फ़ुरसत है। कृपया मेरे साथ-साथ थोड़ा सोचिए। अगर आपके पास फ़ुरसत नहीं है तो आप कुछ नहीं सीख सकते, फ़ुरसत याने अपने लिए, दूसरों की बात सुनने के लिए, खोजबीन करने के लिए समय की सुलभता। ऐसा स्थान विद्यालय है। पूरी दुनिया भर के आधुनिक विद्यालय मस्तिष्क के केवल एक भाग को परिष्कृत कर रहे हैं जो ज्ञान, प्रौद्योगिकी, विज्ञान, जीवशास्त्र, धर्मशास्त्र और इन जैसी अनेक चीजों को प्राप्त करने में लगा हुआ है। वे केवल मस्तिष्क के उस एक विशिष्ट भाग को संस्कारित करने में दिलचस्पी रखते हैं जो बहुत सारा ज्ञान प्राप्त करता है--बाहरी ज्ञानः खगोल भौतिकी, सैद्धान्तिक भौतिकी, स्थापत्य, अभियान्त्रिकी, शल्य चिकित्सा, वैद्यक। वह ज्ञान कुशलतापूर्वक या आधे-अधूरेपन से रोज़ी-रोटी कमाने में इस्तेमाल किया जा सकता है, जो कि

schools have existed for thousands of years. Here in these schools we are trying something entirely different. You don't mind my telling you all this. Are you interested in this? Not very much, but all right! (Laughter)	व्यक्ति पर निर्भर करता है। ऐसे विद्यालय पिछले हज़ारों सालों से अस्तित्व में रहे हैं। यहां पर, इन विद्यालयों में हम कुछ पूर्णतया भिन्न करने का प्रयास कर रहे हैं।
Here we are trying not only to educate academically, 'A' levels and 'O' levels and all the rest of it, but also to cultivate, to understand, to educate, to enquire into the whole psychological structure of human beings. Students come already conditioned, so there begins the difficulty. One has not only to help generally to uncondition but also to enquire much more deeply. This is what these schools with which we are connected are trying to do. They may not succeed - probably they won't - or probably they will. But as it is a difficult task one must attempt it, not always follow the easiest path. This is a difficult subject to go into but it doesn't create an elite? What is wrong with being an elite? What is wrong with it? Do you want everybody, and everything, to be pulled down to the common denominator? That is one of the troubles of so-called democracy. It has been a problem in India - I won't go into all that.	हम न केवल दसवीं या बारहवीं की विषय-संबंधी शिक्षा देने का प्रयत्न कर रहे हैं बल्कि समझदारी पैदा करने की, मानव के अपने पूरे मनोवैज्ञानिक ढांचे के बारे में अन्वेषण की कोशिश कर रहे हैं। छात्र पहले से ही संस्कारों में जकड़े, प्रतिबन्धित होकर आते हैं और वहीं से कठिनाई की शुरुआत हो जाती है। उनको हर प्रकार से संस्कारबद्धता से छुटकारा दिलाने में ही नहीं बल्कि और बहुत गहरे पैठने में, गहराई से जांच-पड़ताल करने में मदद करनी होती है। ये सारे विद्यालय जिनसे हम जुड़े हुए हैं, यही करने की कोशिश कर रहे हैं, वे कामयाब हो सकते हैं या नहीं भी हो सकते हैं। लेकिन चूंकि वह मुश्किल काम है, हमें उसे करने का प्रयास तो करना होगा, बजाय हमेशा सबसे आसान मार्ग अपनाकर तसल्ली कर लेने के। सोच-विचार के लिए यह एक जटिल विषय है, परन्तु वह विशिष्ट वर्ग का निर्माण नहीं करता है। विशिष्ट वर्ग के साथ गलत क्या है? क्या आप चाहते हैं कि हर एक व्यक्ति और हर एक चीज सामान्य स्तर पर घसीटी जाए? तथाकथित लोगतंत्र में यह भी एक मुसीबत है।
So there is no contradiction as far as one can see. Contradiction exists only when you assert something and contradict it at another time. But here we are saying that no one can lead you to truth, to illumination, to the right kind of meditation, to right behaviour, no one because you, each one of us, is responsible for himself, not depending at all on anybody. And we are trying in all these schools in India, here and so on to cultivate a mind, a brain that is holistic, not just knowledge per se for action in the world, but not to neglect the psychological nature of man because that is far more important than the academic career. One must have in the present world, in the present civilization, whatever that civilization is, they must have the capacity to earn a livelihood, and apparently a certain kind of education is necessary, and most schools in the West and in	जहां तक कोई देख सकता है, इसमें कोई असंगति नहीं है। असंगति तब होती है जब आप एक बार कुछ कहते हैं और दूसरी बार उसका खण्डन करते हैं। पर यहां हम ये कह रहे हैं कि कोई भी आपको सत्य के प्रति, प्रबोधन, सही प्रकार का ध्यान, सही आचरण तक नहीं ले जा सकता, क्योंकि व्यक्ति अपने-अपने लिए उत्तरदायी होता है किसी और पर निर्भर नहीं होता है। इन सब विद्यालयों में हम उस मन को, उस मस्तिष्क को बनाने की कोशिश कर रहे हैं, जो समग्र हो, इस दुनिया में काम करने के लिए ज्ञान प्राप्त करे लेकिन मनुष्य के मनोवैज्ञानिक स्वभाव की अनदेखी न करे; क्योंकि वह शास्त्र-चर्या से कहीं ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है। इस वर्तमान जगत में, वर्तमान सभ्यता में--वह जो भी कुछ हो--अपनी जीविका चलाने की क्षमता पाने के लिए किसी निश्चित प्रकार की

the East are neglecting the other side which is far deeper and greater. And here we are trying to do that. We may succeed. We hope we do but we may also not. But we are doing something that is not done in other schools, it doesn't mean that we are the only school but we are trying to do it. There is no contradiction. Is that all right? I have answered the question.	शिक्षा की आवश्यकता है; और पश्चिम में या पूरब में ज़्यादातर विद्यालय इस दूसरे पहलू की जो कि बहुत गहरा और महत्त्वपूर्ण है, उपेक्षा कर रहे हैं। और इन स्कूलों में हम इन दोनों पक्षों को साथ लेकर चलने की कोशिश कर रहे हैं, जो दूसरे स्कूलों में नहीं किया जा रहा है। शायद इसमें हम कामयाब हो जायें, ऐसी उम्मीद तो है--लेकिन नहीं भी हो सकते हैं। हम कुछ ऐसा करने में लगे हैं जो दूसरे स्कूलों में होता नज़र नहीं आता, इसका मतलब यह भी नहीं है कि बस हमारा ही विद्यालय यह कर रहा है, बात इतनी है कि हम यह प्रयास कर रहे हैं। इसमें तो कहीं कोई असंगति नहीं।
	--सितम्बर १, १९८१
	ब्रॉकवुड पार्क, इंग्लैण्ड